नरेन्द्र कोहली के उपन्यास 'कर्म' का सशक्त पात्र अर्जुन : एक विश्लेषण

सुरेश कुमार

शोध-छात्र कश्मीर विश्वविद्यालय

श्रीनगर (कश्मीर)190006

'कर्म' उपन्यास नरेन्द्र कोहली द्वारा लिखित महासागर का तीसरा खंड है | प्रस्तुत उपन्यास में अर्जुन की महत्वपूर्ण भूमिका है | श्री कृषण के पर्थ संबोधन के कारण अर्जुन का नाम पर्थ पड़ा | महाभारत के विशाल आकर को समेटे अर्जुन एक पूरी कथा है | श्री कृषण को जय और अर्जुन को विजय का प्रतीक माना जाता है | महाभारत का मूल नाम जय कथा है इसी कारण यह कथन प्रसिद्ध है– 'जहाँ जय है वहां विजय अर्थात् जहाँ धर्म है वहीँ जय है |'

अर्जुन हस्तिनापुर के राजा पांडु और कुंती का तीसरा पुत्र था | जिसे कुंती ने देवराज इंद्र के वरदान से प्राप्त किया था | अर्जुन महाभारत का महान योद्धा था महाभारत की साडी व्यथा उसके चरित्र के इर्द-गिर्द घूमती है जिससे यह सिद्ध होता है कि वह महाभारत का नायक था |महाभारत के विशाल युद्ध की जीत का श्रेय श्री कृषण और अर्जुन को ही जाता है|

अर्जुन संसार का सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बनकर भी हमारे सामने उभरता है|उसकी विद्या-कला के सामने संसार का कोई भी योद्धा नहीं टिक सकता था | अर्जुन आचार्य द्रोण का प्रधान एवं सर्वप्रिय शिष्य था | गुरु अर्जुन को अपार प्रेम करते थे |एक दिन द्रोण

पानी में नाहा रहे थे कि अचानक एक जलजन्तु आचार्य के पेरों को काटने लगा जिसे द्रोण पीड़ा से चिल्लाने लगा और अपने शिष्यों को पुकारने लगे उनका कोई भी शिष्य आगे नहीं बढ़ा| तभी अर्जुन नेपानी में कूदकर आचार्य द्रोण को पकड़ लिया और जोर लगाकर आचार्य को खींचा वह ऐसे मुक्त हुए कि जैसे कुछ हुआ ही नहीं था|सचमुच में कुछ हुआ भी नहीं था |स्वयं आचार्य ने अपने शिष्यों की परीक्षा लेने का यह उपक्रम किया था |इस परिक्ष में अर्जुन को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ था |अन्य सारे शिष्य बूरी तरह विफल रहे|

गुरु ने अर्जुन को गले लगाकर उसका माथा चूमा और आशीर्वाद दिया और कहा मैं अर्जुनको संसार का सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर देखना चाहता हूँ |मेरी विद्या में ऐसा कुछ नहीं है जो में अर्जुन को ना दूँ |प्रत्येक गुरु अपने लिए एक कला बचाके रखता है आचार्य द्रोण यह नहीं करेगा– 'योग्य शिष्य को योग्य दान' |उनके अनुसार योग्य शिष्य ही गुरु- ज्ञान का प्रथम अधिकारी होता है| अर्जुन इस बात से बहुत प्रसन्न था कि गुरु ने उन्हें संसार की सर्वश्रेष्ट निधि दी है |

द्रोण ने कहा था की में अर्जुन को संसार का सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर देखना चाहता हूँ |इसी कारण उन्होंने एकलव्य का अंगूठा गुरु दक्षिणा में माँगा था और कर्ण को निम्न जाती का कहकर शिक्षा नहीं दी थी |जिससे अर्जुन का कोई प्रतिद्वंद्वी प्रकट न हो सके और फलस्वरूप उन्होंने अपनी शिक्षा को कलंकित किया था|गुरु द्रोण द्वारा ली गई अनेक परीक्षाओं में प्रथम स्थान पानेवाले अर्जुन केलिए ही द्रोण ने यह सब किया था और अपने लिए अर्जुन से युद्ध में मृत्यु मांगी थी|

अर्जुन एक आज्ञाकारी शिष्य था जो अपने गुरु द्रोण के कहने पर गुरु दक्षिणा में राजा द्रोपद को बंदी बनाकर द्रोण के चरणों में डाल देता है |द्रोपदी को स्वयंवर में अर्जुन ने जीता था |किन्तु वह माँ कुंती के कहने पर पांच भाइयों की पत्नी बनती थी |

युधिष्ठिर के साथ एकांत देखने पर अर्जुन को बनवास भोगना पड़ा था |किन्तु इस बनवास में उन्होंने बहुत ज्ञान प्राप्त किया था |इसी बनवास के दौरान वह नाग कन्या उलूपी से गंधर्व-विवाह करते है और मणिपुर के राजा चित्रवाहन भी पुत्री चित्रांगदा भी अर्जुन से विवाह करती है|स्वयं श्री कृष्ण अर्जुन पर इतने मोहित हैं कि उन्होंने अपनी बहन सुभद्रा का विवाह अर्जुन से करवाया था |

वेदव्यास के आदेश पर अर्जुन ने इन्द्रकील पर्वत पर तपस्या कर भगवान् शिव को प्रसन्न किया था और उनसे पशुपास्त्र प्राप्त किया था उसकी साधना से प्रसन्न होकर देवराज इंद्र उसे दिव्यास्त्र तथा देवास्त्र प्रदान करता है |देवराज इंद्र की सभा की अप्सरा उर्वशी अर्जुन के आगे प्रेम-प्रस्ताव रखती है जिससे अर्जुन अस्वीकार कर देता है |

युग के महान योद्धा अर्जुन को परिस्थितियों के कारण एक वर्ष किन्नर बनकर रहना पड़ता है जब वह अज्ञात वनवास में विराट नगर के रजा विराट की पुत्री उतरा को नृत्य-गान सिखाते हैं |महाभारत में अर्जुन का प्रतिद्वंद्वी कर्ण था अर्जुन कारण पर हमेशा हावी रहा |फिर भी कर्ण वध नित्योल्लंघन से संभव हो सका |जब युद्ध-भूमि में कर्ण के रथ का पहिया धरती

में धंस जाता है और कर्ण पहिये को निकालने केलिए रथ से नीचे उतरता है तो श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं –

खड़ा है देखता क्या मोन भोले रश्मिरथी

शरासन तान, बसुअवसर यही है |

घडी फिर और मिलने को वोही है

विशिख कोई गले के पार कर दे |

अभी ही शत्रु का संहार कर दे ,

यह सुनकर अर्जुन संकुचित हो उठता है क्यूंकि निहत्थे पर वार करना वीरोचित कार्य नहीं है|

नरोचित,किन्तु क्या यह कार्य होगा

मलिन इससे नहीं क्या धर्म होगा|

इस प्रकार अर्जुन वीर योद्धा होने के कारण निहत्थे कर्ण पर वार नहीं करना चाहता है किन्यु अर्जुन कृष्ण की बात को भी टाल नहीं सकता था जिस कारण उसने निहत्थे कर्ण का वध नहीं किया था|अर्जुन जितना वीर था उतना ही गुरुजनों का भक्त भी था | कृष्ण का तो वह एक साथ सखा,मित्र,बहनोई,भाई आदि था|

अर्जुन को प्रमुख दस नामों से जाना जाता है-

1.अर्जुन

2.फाल्गुन

3.विष्णु

4.किरीटी

5.शवेतवाहन

6.वीभत्सू

7.विजय

8.कृष्ण

9.सव्यसांची

10.धनंजय

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि नरेन्द्र कोहली के उपन्यास 'कर्म' में अर्जुन के पात्र को प्रमुखता देकर उनके वीरत्व,शोर्य, पराक्रम, गुरु- भक्ति, कर्तव्यनिष्ठा तथा आज्ञाकारिता जैसे उच्च मूल्यों को अर्जुन के द्वारा प्रखरता से दर्शाया है|